18

यीशु की एक और झलक

(यूहन्ना 16)

''उसके चेलों ने कहा, देख, अब तो तू खोलकर कहता है, और दृष्टान्त नहीं कहता। अब हम जान गए, हैं कि तू सब कुछ जानता है, और तुझे प्रयोजन नहीं, कि कोई तुझ से पूछे, इस से हम प्रतीति करते हैं, तू परमेश्वर से निकला है। यह सुन यीशु ने उन से कहा, क्या तुम अब प्रतीति करते हो? देखो, वह घड़ी आती है वरन आ पहुंची कि तुम सब तितर-बितर होकर अपना अपना मार्ग लोगे, और मुझे अकेला छोड़ दोगे, तौभी मैं अकेला नहीं क्योंकि पिता मेरे साथ है'' (आयतें 29-32)।

क्रूस पर अपने चढ़ाए जाने का समय निकट आने पर यीशु ने अपने प्रेरितों को बताया कि अब उनसे प्रतीकात्मक भाषा में बातें नहीं करेगा। यानी उनसे उन बातों को छिपाने के लिए जिन्हें समझने के लिए वे अभी बड़े नहीं थे, दृष्टांतों में नहीं बोलेगा। अन्त अब निकट दिखाई दे रहा था और उसने उनसे साफ़-साफ़ बात करने का निर्णय लिया, क्योंकि आने वाली त्रासदी के लिए जो कुछ होने वाला था उसके लिए स्पष्ट और धीरज रखना आवश्यक था। उन्हें यीशु की मृत्यु के होने वाले प्रभाव के लिए सही ढंग से तैयार करने के लिए साफ़-साफ़ कहना आवश्यक था।

इस तथ्य का कि इस अवसर पर अपनी बात साफ़-साफ़ कहने के लिए यीशु ने ध्यान खींचा कि आज यह नहीं था कि वह फिर कभी इस प्रकार अपने प्रेरितों से बात न करने की योजना बना रहा है। अगले दिनों में उसने उनके साथ और साफ़ बातें करनी थी। उसकी प्रक्रिया में न केवल उसकी वर्तमान चर्चा बल्कि वे बातें भी थीं जो पवित्र आत्मा ने प्रगट की थीं। आत्मा के याद दिलाने और प्रकाश लेने के लिए आकर उन्हें पिता की योजना के अनुसार जो कुछ हुआ था और जो कुछ होने वाला था उसकी *सच्चाई* जानने के योग्य बनाना था।

यीशु की बात की स्पष्टता को समझते हुए प्रेरितों ने कहा, ''देख, अब तो तू खोलकर कहता है, और दृष्टान्त नहीं कहता। अब हम जान गए, हैं कि तू सब कुछ जानता है, और तुझे प्रयोजन नहीं, कि कोई तुझ से पूछे, इस से हम प्रतीति करते हैं, तू परमेश्वर से निकला है'' (16:29, 30)। वे इस बात को समझ सकते थे कि जो कुछ यीशु उनसे कहा रहा है वह सही और पूरा है। किसी ने उससे जो कुछ उसने अभी अभी कहा था उसका अर्थ बताने को नहीं कहा। प्रेरितों के लिए इतनी स्पष्टता उसकी ईश्वरीयता का प्रमाण थी।

यीशु ने जो कुछ वह कर रहा था और उनके यह मानने पर कि वह पिता की ओर से आया है, उनसे यह पूछते हुए जवाब दिया, ''क्या तुम अब विश्वास करते हो?'' वह उन्हें बताना चाहता था कि उन्हें और समझने की आवश्यकता है। वह उन्हें दिखाना चाहता था कि उन वास्तव में आने वाली बातों का सामना करने के लिए उनका विश्वास और समझ सीमित थी और उनकी

परख बड़ी बुरी तरह से होनी थी।

अपने प्रेरितों के साथ यीशु की यह अन्तिम बातचीत अपने प्रभु की एक और तस्वीर दिखाती है जिसे हमें समझना चाहिए। हम इस तस्वीर में क्या देखते हैं ?

वह साफ़-साफ़ बोलता है

हम यीशु को अपने ईश्वरीय उद्धारकर्ता के रूप में देखते हैं जो हम से साफ़ बातें करता है। यीशु हर समय सिखाने वाला मसीह है। उसने अपने प्रेरितों को सिखाया, ''मैंने ये बातें तुम से दृष्टांतों में कही हैं, ... पर अब तुम्हें खोलकर पिता के विषय में बताऊंगा'' (16:25)। वह उन्हें बड़े स्नेह से उस गहरी समझ में ले जा रहा था जो जल्द ही उन पर आने वाली थी। पहले उसने उन्हें दृष्टांतों की भाषा का इस्तेमाल करते हुए केवल वही दिया था जिसे वे समझ सकते थे, पर अब वे उन्हें और बता रहा था कि परिस्थितियों की यही मांग थी।

मुख्यतया यीशु की सेवकाई सिखाने की सेवकाई थी। वह राज्य के आने की घोषणा करता हुआ नगर नगर घूमता था। उसने अपने चेलों के साथ राज्य का काम करते हुए तीन साल बिताए थे। ''चेला'' सीखता है या ''शिष्य'' वही होता है और पवित्र शास्त्र के शब्दों में इसे मसीह का छात्र कहा गया है। चेले के लिए हर रोज़ सीखना और बढ़ना आवश्यक है। यीशु के चेलों ने चाहे एक दम से नहीं सीखा पर प्रभु ने उन्हें सिखाना जारी रखा। हमारे साथ भी वह ऐसा ही कर रहा है। कई बार हम समझने में ढीले होते हैं, पर यीशु हमें सिखाना जारी रखता है कि क्या हमारा उद्धार सिद्धता पर आधारित है ? नहीं, यह तो विश्वास और सच्चाई में हमारे यीशु के पीछे चलने पर आधारित है।

वह धीरज से राह देखता है

दूसरा, हम यीशु को अपने ईश्वरीय उद्धारकर्त्ता के रूप में देखते हैं जो धीरज से हमारी राह देखता है। वह प्रतीक्षा करते रहने वाला मसीह है। यीशु ने प्रेरितों से पूछा, ''क्या तुम अब विश्वास करते हो ?'' (16:31)। उसे मालूम था कि उन पर उसकी मृत्यु की बड़ी परीक्षा आने पर उनका विश्वास डगमगा जाएगा। उसने कहा, ''देखो, वह घड़ी आती है बरन आ पहुंची कि तुम सब तितर-बितर होकर अपना अपना मार्ग लोगे, और मुझे अकेला छोड़ दोगे, तौभी मैं अकेला नहीं क्योंकि पिता मेरे साथ है'' (16:32)।

दर्शकों के रूप में हमें अपेक्षा हो सकती है कि यीशु अपने प्रेरितों से धैर्य खो देगा। फिर उसने उनके साथ, उन्हें विश्वास देना सिखाते और अगुआई करते हुए, तीन साल बिताए थे। अभी भी उसे मालूम था कि जब प्रदर्शन का उसका बड़ा समय अर्थात पृथ्वी की सबसे बड़ी परीक्षा आएगी तो वे जिन्हें उसने अपना इतना समय दिया था तितर-बितर हो जाएंगे और अपने अपने घरों को भाग जाएंगे।

जैसा कि अब यहां और धन्य वचनों में देखते हैं, यीशु वह उद्धारकर्त्ता है जो हमारी राह देखता कि हम उसकी सच्चाई को और स्पष्ट ढंग से समझें और सचमुच उसमें विश्वास करें। उसने न केवल अपना इनकार करने के बाद पतरस को क्षमा करके उसे वापस स्वीकार किया बल्कि उसने अपने सभी प्रेरितों को क्षमा करके उन्हें फिर से ग्रहण किया; क्योंकि वे भी उसे छोड़ गए थे।

जो कुछ उसने उनके लिए किया, वही वह हमारे लिए करेगा। यीशु और उसके उद्धार से हमें केवल एक बात रोक सकती है और वह है मन फिराने की अनिच्छा। यहूदा को याद रखना होगा। उसने मन नहीं फिराया और बिना मन फिराए व्यक्ति बिना आशा के है। यहूदा का जीवन आशाहीन अन्त वाली अपनी बनाई कहानी था, जबकि पतरस का जीवन अन्तहीन आशा की मसीह की बनाई कहानी था। मन फिराने वाला व्यक्ति मसीह के अनन्त जीवन में प्रवेश करता है।

वह अचूक ढंग से सम्भालता है

तीसरा, हम यीशु को अपने ईश्वरीय उद्धारकर्त्ता के रूप में देखते हैं जो हमारी सम्भाल करता है। यीशु सदा वफ़ादार मसीह है। उसे मालूम था कि प्रेरित सब छोड़ जाएंगे और उसे अकेला छोड़ देंगे, पर उसने उन से कहा, ''... मैं अकेला नहीं क्योंकि पिता मेरे साथ है'' (16:32)। उसने अपनी पीठ नहीं दिखाई, क्योंकि उसके मित्र उसके सबसे नज़दीकी दोस्त सुरक्षित होने के लिए तितर बितर हो गए थे परन्तु वह उस योजना को लेकर आगे बढ़ता है जिसे पूरा करने को वह समर्पित था। उसके इस काम में उसका पिता उसके साथ था। परन्तु परमेश्वर हमारे पापों के लिए बलिदान होने के लिए अपने आपको यीशु के साथ नहीं मिला सकता; यह काम केवल यीशु ही कर सकता था। यीशु क्रूस पर हमारा पाप बनने के समय पिता के अपने पुत्र से अलग होने के समय (2 कुरिन्थियों 5:21) यीशु ने अपने पिता के साथ एकता को बनाए रखना था। पिता ने उसे संसार में भेजा। यीशु ने पिता की योजना को स्वीकार करके इसे अन्ज़ाम देने का निश्चय किया था, चाहे कोई उसके साथ हो या न।

यीशु को हमारे लिए क्रूस पर जाने से कोई बात नहीं रोक पाई; उस ने यरूशलेम जाकर क्रूस का सामना किया। अब उसे गिरफ़्तारी पेशियों और क्रूस पर चढ़ाए जाने को अकेले ही सहना था। तौभी वह उन सब के उद्धार के लिए जिन्होंने उसमें विश्वास लाना था यह करने को दृढ़ निश्चय था।

सरांश

हमारा उद्धारकर्त्ता कैसा है? हमारा उद्धारकर्त्ता ऐसा है जो हमें स्पष्ट सिखाता है कि हम आने वाले अपने भविष्य के लिए तैयार हों। हमारा ऐसा उद्धारकर्त्ता है जो धीरज से हमारी राह देखता है कि हम समझ और गहरा विश्वास पाएं। हमारा उद्धारकर्त्ता ऐसा है जो हमें उद्धार देने को खतरे और पीड़ा में से गुज़रकर निकल आया। वह हमें छोड़ता नहीं है, चाहे हम उसको छोड़ दें तब भी। वह हमारे समझ में धीमे होने पर हमसे आगे नहीं निकलता। जब कोई उसके साथ खड़ा नहीं था तब भी वह उद्धार की एक बड़ी योजना को स्थापित करने के लिए अपने आपको देने के लिए तैयार रहा। वह हमें सिखाएगा, हमारे साथ धीरज रखेगा और बिना किसी रुकावट के हमें अनन्त जीवन में ले जाएगा। संक्षेप में हमारे पास ऐसा उद्धारकर्त्ता है जो हम से साफ़ बात करता है, जो हमारे लिए दुख उठाता है, जो हमें अनन्त विजय में से जाते हुए देखेगा।

''देखो, वह घड़ी आती है बरन आ पहुंची कि तुम सब तितर-बितर होकर अपना अपना मार्ग लोगे, और मुझे अकेला छोड़ दोगे, तौभी मैं अकेला नहीं क्योंकि पिता मेरे साथ है'' (यूहन्ना 16:32)।

''इस पर सब चेले उसे छोड़कर भाग गए'' (मरकुस 14:50)।

''तीसरे पहर के निकट यीशु ने बड़े शब्द से पुकारकर कहा, एली, एली, लमा शबक्तनी? अर्थात हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे छोड़ दिया?'' (मत्ती 27:46)।